SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

राचरितमानस के आनुषांगिक महिला पात्रों के वर्तमान सन्दर्भ

आलोक मिश्र, Ph.D., **श्रीकांत मिश्र,** Ph.D., हिंदी विभाग
स्वामी शुकदेवानन्द कॉलेज, शाहजहाँपुर, उत्तरप्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Authors
आलोक मिश्र, Ph.D.
श्रीकांत मिश्र, Ph.D.

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 20/12/2023
Revised on : -----
Accepted on : 27/12/2023
Plagiarism : 00% on 20/12/2023

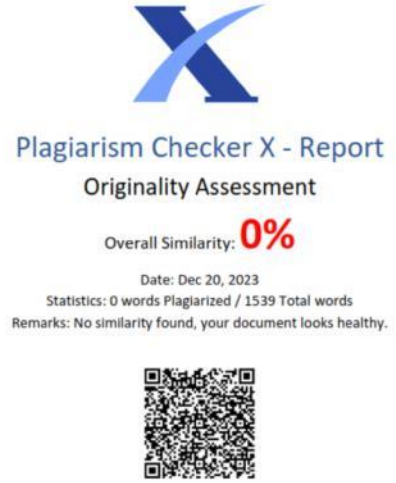

शोध सार

साहित्य समाज की अनुकृति ही है। समाज में स्त्री पुरुष दोनों का संभाव महत्वपूर्ण होता है। इतना ही नहीं उनके साहचर्य के बिना सृष्टि का निर्माण और प्रगति असंभव है। जिस प्रकार जीवन की संपूर्णता में यह दोनों तत्व महत्वपूर्ण होते हैं उसी प्रकार यदि किसी साहित्य में एक ही पक्ष का निरूपण है तो वह श्रेष्ठ कव्य तो नहीं। खासकर चरित्र काव्य की पूर्णता में स्त्री–पुरुष दोनों के जीवन से तत्वों को लेकर उसे समाज उपयोगी रूप प्रदान किया जाता है। रामकथा भी एक चरित काव्य है और इस चरित काव्य में स्त्री–पुरुषों दोनों का चारित्रिक विकास समान रूप से देखने को मिलता है। सीता और राम काव्य के प्रमुख पात्र हैं। इसके साथ ही कैकेई एवं उर्मिला पर साहित्य में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की पहल के बाद प्रचुर साहित्य सर्जन हुआ लेकिन शेष स्त्री पात्रों पर अभी हिंदी साहित्य में मनभर काम नहीं हुआ है। प्रस्तुत शोध पत्र रामचरितमानस के आनुषांगिक महिला पात्रों का वर्तमान सन्दर्भों में अनुशीलन करने का विनम्र प्रयास है।

मुख्य शब्द

आनुषांगिक, महिला पात्र, वर्तमान सन्दर्भ, अनुशीलन.

पुरुष की प्रधानता समाज में है तो साहित्य में भी रहेगी! ऐसी सोच किसी प्रगतिशील समाज की नहीं हो सकती क्योंकि नर और नारी एक ही सिक्के के दो पहलू हैं प्रस्तुत भाग में रामकथा के उन स्त्री पात्रों की चर्चा की जायेगी जो साहित्य में चर्चा से छूट गए हैं।

डॉ. पांडुरंग राव रामकथा के सुधी अध्येता हैं। वे वाल्मीकि रामायण से लेकर अन्य हिन्दी रामायणों में व्यक्त महिला पात्रों का आध्यात्मिक, सांस्कृतिक व साहित्यिक दृष्टि से विश्लेषण प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि रामायण केवल राम का अध्ययन नहीं है। उदाहरण

दृष्टव्य है – "वास्तव में रामायण केवल राम का अध्ययन नहीं है, बल्कि रामा (सीता) का भी अध्ययन है। दोनों का यह समन्वित अध्ययन है इस बात को जानकी के विश्लेषण में स्पष्ट किया गया है। दशरथनन्दन राम और जनकतनया जानकी एक ही तत्त्व के दो रूप हैं। सीता पृथ्वी की पुत्री है और राम आकाश के स्वामी आदित्य के वंशज हैं। पृथ्वी और आकाश अलग–अलग दिखाई देने पर भी तत्त्वतः एक हैं, एक ही ब्रह्माण्ड के पिण्ड हैं। सीता राम की भावना में भी यही अभेद देखकर गोस्वामी तुलसीदास ने कहा थाः गिरा अरथ जल बीचि सम कहियत भिन्न न भिन्त। बन्दों सीताराम पद जिनहि परमश्वि विग्न।।

आश्चर्य की बात यह है कि सीता–राम के जीवन में सुख–शान्ति नहीं दिखाई नहीं देती। केवल दुख ही दुख है, विषाद–ही–विषाद है। लेकिन इसी विषाद को दोनों की लोकोत्तर चेतना ने प्रसाद के रूप में स्वीकार किया है। विवाद को प्रसाद बनाने की इस लोकोत्तर साधना में जानकी और दाशरथी का सारा जीवन समर्पित रहा। रामायण इसी समर्पण की स्वर लहरी है जिसमें दोनों के स्वर समाहित और समेकित हैं।"[1]

अनसूया

सती अनुसूया भारतीय संस्कृति में समादृत विदुषी के रूप में जानी जाती हैं। अनुसूया का परिचय देते हुए ललित शुक्ल जी लिखते हैं – "दक्ष की चौबीस कन्याओं में से एक। यह अत्रि ऋषि की पतिव्रता पत्नी थी। मतांतर से कर्दम एवं देवहूति की एक कन्या का नाम भी यही है। मानस में राम वनवास के प्रसंग में सीता को पतिव्रत का शिक्षापूर्ण उपदेश दिलवाया गया है।"[2]

अनुसूया के उपदेश वर्तमान वैश्विक परिवेश में बढ़ रहे विवाह विच्छेद के प्रकरणों को कम करने में पूर्णतः सफल है। पति पत्नी के परस्पर जीवन यापन के व्यवहार को रामचरितमानस में बड़े ही उपयोगी ढंग से प्रस्तुत किया गया है। अनुसूया के उपदेश को रामचतितमानसकार ने चौपाईबद्ध करते हुए लिखा हैः

एकइ धर्म एक ब्रत नेमा। कायँ बचन मन पति पद प्रेमा।।
जग पति ब्रता चारि बिधि अहहिं। बेद पुरान संत सब कहहिं।।
उत्तम के अस बस मन माहीं। सपनेहुँ आन पुरुष जग नाहीं।।
मध्यम परपति देखइ कैसें। भ्राता पिता पुत्र निज जैंसें।।
धर्म बिचारि समुझि कुल रहई। सो निकिष्ट त्रिय श्रुति अस कहई।।
बिनु अवसर भय तें रह जोई। जानेहु अधम नारि जग सोई।।
पति बंचक परपति रति करई। रौरव नरक कल्प सत परई।।
छन सुख लागि जनम सत कोटि। दुख न समुझ तेहि सम को खोटी।।
बिनु श्रम नारि परम गति लहई। पतिब्रत धर्म छाड़ि छल गहई।।
पति प्रतिकुल जनम जहँ जाई। बिधवा होई पाई तरुनाई।।[3]

अहिल्या

रामायण के महिला पात्रों में अहल्या का भी उल्लेखनीय स्थान है। डॉ. पांडुरंग राव अहल्या का परिचय देते हुए लिखते हैंः

"रामायण की चार महिलाओं में से भी अहल्या का इतिवृत्त सबसे पहले आता है–सीता से भी पहले वास्तव में मिथिला के रास्ते में राम अहिल्या से मिलते हैं। बल्कि कहना चाहिए कि अहिल्या का शाप विमोचन होने के पश्चात् ही राम सीता को ग्रहण करने योग्य बन जाते हैं। अहिल्या का शाप विमोचन भारत के सांस्कृतिक इतिहास में एक महत्वपूर्ण और रोचक घटना है जिसने प्रतिष्ठित विद्वानों, कवियों, समा– लोचकों और दार्शनिकों का ध्यान आकृष्ट किया है, न केवल भारत में, बल्कि सारे विश्व में।"[4]

रामचरितमानस में अहिल्या उद्धार का प्रकरण आता है जिसमें गोस्वामी तुलसीदास जी लिखते हैंः

एहि भाँति सिधारी गौतम नारी बार बार हरि चरन परी।
जो अति मन भावा सो बरु पावा गै पतिलोक अनंद भरी।।[5]

शबरी

रामकथा का विस्तार इसलिए है क्योंकि इस कथा के सभी पात्र अपनी उपादेयता वर्तमान संदर्भों में भी बनाए हुए हैं। इसी तरह की एक महिला पात्र शबरी भी है। शबरी का परिचय देते हुए ललित शुक्ल जी लिखते हैं:

''भील (शबर) जाति में उत्पन्न एक तपस्विनी नारी का नाम 'शबरी' था। शबरी का पिता भीलों का राजा था। शबरी के विवाह के अवसर पर बलि देने के लिए बहुत सारे बकरे और भैंसे एकत्र किए गए थे। इतने प्राणियों का आसन्न अंत देख शबरी ने विवाह न करने का निश्चय किया। तत्पश्चात् वह सदा के लिए वन में चली गई और मतंग वन में मतंग ऋषि के आश्रम में सफाई में निरत हो गई। कालांतर में मतंग ऋषि के स्वर्गवास हो जाने पर भी वह उसी आश्रम में रहती थी। जब सीता को खोजते हुए राम, लक्ष्मण वहाँ पहुँचे थे तो उसने सादर प्रणाम करके उनका आतिथ्य किया था। मीठे–मीठे फल उन्हें खाने के लिए दिए। देने से पूर्व उन फलों को उसने चख लिया था कि मीठे हैं या नहीं ? वह मतंग मुनि के निर्देशानुसार राम की प्रतीक्षा कर रही थी। उसने अपने को हीन जाति की समझकर राम की सेवा के अयोग्य कहा तो राम ने कहा कि ईश्वर–प्राप्ति में ऊँची–नीची जाति और स्त्री–पुरुष के भेद का कोई अर्थ नहीं होता। राम के ही वरदान से शबरी जैसी तपस्विनी नारी को स्वर्गलोक मिला था। 'वाल्मीकि रामायण' के अनुसार शबरी एक सिद्ध तपस्विनी थी।''[6]

रामकथा में माधुर्य के प्रवाह को जीवंत करने वाले तुलसीदास जी रामचरितमानस में शबरी का वर्णन बड़े आदर भाव से करते हैं। शबरी धैर्य की प्रतिमूर्ति है। इतना धैर्य मां पृथ्वी में ही हो सकता है अन्यथा जीवन के बालपन से जीवन की जरा अवस्था तक राम के दर्शन का लोभ संवरण कर पाना बहुत ही कठिन होता है। पल पल बदलते मानसिक स्थिति और सामाजिक दायरे मनुष्य को जीवन पद्धति बदलने पर मजबूत कर देते हैं। वह कोई विरला धर्मात्मा ही होगा जो मानसिक और सामाजिक स्थिति में सामंजस्य करते हुए अपने संकल्प पर स्थित रहे। मैंने पूर्व में ही लिखा है कि पात्रों की प्रासंगिकता तभी है जब वे वर्तमान संदर्भों को जोड़ते हों। मैं जब–जब रामकथा का पारायण साहित्यिक या धार्मिक दृष्टि से करता हूं, तब–तब मुझे मां शबरी का चरित्र और सुमधुर चखकर रखे गए बदरीफल और राम का प्रेम पूर्वक उन फलों का स्वीकार करना। सच कहूं तो मुझे ऐसा लगता है कि किसी मां ने अपने पुत्र को वस्तु का विधिवत निरीक्षण करने के बाद जब समझ लिया कि यह उसके लिए उपयोगी और सुमधुर है तभी वह प्रदान करती है। शबरी से राम का प्रेम छिपा नहीं। बड़ी प्रीति है शबरी पर राम की लेकिन शबरी का भाव देखिए, कितना निश्छल, कितना सरलः

अधम ते अधम अधम अति नारी । तिन्ह महँ मैं मतिमंद अधारी।।[7]

राम की आत्मीयता इसी से ज्ञात होती है कि वे शबरी के दिन वचन सुनकर उसे संबोधित करते हुए कहते हैं:

कह रघुपति सुनु भामिनि बाता। मानउँ एक भगति कर नाता।।
जाति पाँति कुल धर्म बड़ाई। धन बल परिजन गुन चतुराई।।
भगति हीन नर सोहइ कैसा। बिनु जल बारिद देखिअ जैसा।।[8]

शबरी प्रसंग में यह तथ्य भी विचारणीय है कि राम सर्व कल्याणकारी भक्ति का उपदेश जिन गिने चुने लोगों को देते हैं उन्हीं में शबरी भी शामिल है। अगर नवधा भक्ति का प्रसंग लिया जाए तो केवल शबरी को ही नवधा भक्ति का उपदेश राम द्वारा दिया जाता है।

प्रथम भगति संतन्ह कर संगा। दूसरि रति मम कथा प्रसंगा।।
गुर पद पंकज सेवा तीसरि भगति अमान।
चौथि भगति मम गुन गन करइ कपट तजि गान।।
मंत्र जाप मम दृढ़ बिस्वासा। पंचम भजन सो बेद प्रकासा।।
छठ दम सील बिरति बहु करमा। निरत निरंतर सज्जन धरमा।।
सातवँ सम मोहि मय जग देखा। मोतें संत अधिक करि लेखा।।
आठवँ जथालाभ संतोषा। सपनेहुँ नहिं देखइ परदोषा।।

नवम सरल सब सन छलहीना। मम भरोस हियँ हरष न दीना।।
नव महुँ एकउ जिन्ह कें होई। नारि पुरुष सचराचर कोई।।[9]

यह नवधा भक्ति समाज के निर्माण की दृष्टि से, सामाजिक कल्याण की दृष्टि से सीय राममय सब जग जानी का उद्भावन करती है। यही भक्ति तो है जो राम प्रताप विसमता खोई की सामर्थ्य का निघंटुनाद करती है।

निष्कर्ष

समाज के निर्माण में महिलाओं का योगदान किसी से कम नहीं है। वैदिक काल से वर्तमान तक अनेक विदुषियों ने भारत के सांस्कृतिक, सामाजिक एवं शैक्षिक आदि विविध क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। रामचरितमानस की अनेक अनुकरणीय महिला पात्र लम्बे समय से समाज को प्रभावित करती रही हैं। निश्चय ही ये महिला पात्र शोध और समीक्षा का विषय हैं। इन पर उत्तरोत्तर अधिक समीक्षाएँ और शोध होने ही चाहिए। यह शोध समाज के लिए अति उपयोगी सिद्ध होंगे। भारतीय समाज सदैव नारी का सम्मान और आदर करता रहा है। इस संस्कृति ने विश्व में अपनी श्रेष्ठता इसी आधार पर सिद्ध की। रामचरितमानस भारत में ही नहीं अपितु संपूर्ण विश्व में आदरणीय ग्रंथ है और इसके पात्रों का अपना विशेष महत्व भी है। इसके अनुकरणीय महिला पात्रों ने आदर्श जीवन–दर्शन की स्थापना की है इसीलिए तो मनुस्मृति के तृतीय अध्याय में कहा गया है– 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः। यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः।।' जहाँ नारियों की पूजा नहीं होती है वहाँ समस्त (अच्छी से अच्छी) क्रियाएं (कर्म) निष्फल हो जाती हैं।

संदर्भ सुची

1. राव पांडुरंग, (2013) *रामायण के महिला पात्र,* भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली।
2. रामचरितमानस संदर्भ समग्र, पृष्ठ 51।
3. तुलसीदास, *रामचरितमानस,* अरण्यकाण्ड, दोहा 5।
4. राव पांडुरंग, (2013) *रामायण के महिला पात्र,* भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली, पृष्ठ 34।
5. तुलसीदास, *रामचरितमानस,* बालकाण्ड, दोहा 211 ।
6. तुलसीदास, *रामचरितमानस,* संदर्भ समग्र पृष्ठ 185 ।
7. तुलसीदास, *रामचरितमानस,* अरण्यकाण्ड, दोहा 35।
8. तुलसीदास, *रामचरितमानस,* अरण्यकाण्ड, दोहा 35।
9. तुलसीदास, *रामचरितमानस,* अरण्यकाण्ड, दोहा 35, 36।

****